पाठ 17

लोकगीत

हमारे गाँव और घरों में बहुत से अवसरों पर गीत गाए जाते हैं। ये गीत अक्सर समूह में गाए जाते हैं। गाते समय कोई बाजा भी बजाते हैं। ये गीत हमारी बोली के गीत हैं। इन गीतों को लोकगीत कहते हैं। रविंदर की कक्षा में शिक्षक ने अपने मोबाइल फोन पर बच्चों को लोकगीत सुनाए। तुम भी पढ़ो–

ब्रजभाषा

आज बिरज में होरी रे रसिया।
होरी रे रसिया, बरजोरी रे रसिया।।
उड़त गुलाल लाल भए बादर।
केसर रंग में घोरी रे रसिया।।
बाजत ताल, मृदंग, झाँझ, डफ।
और नगारे की जोरी रे रसिया।।

भोजपुरी

सुंदर सुभूमि भइया भारत के देसवा से।
मोरे प्रान बसे हिम–खोह रे बटोहिया,
एक द्वार घेरे रामा हिम–कोतवलवा से,
तीन द्वार सिंधु घहरावे रे बटोहिया।

अवधी

बाबा निबिया कै पेड़ जिनि काटेउ
निबिया चिरैया कै बसेर,
बलैया लेहु बीरन की।
हो मोरे बाबा।
बाबा सगरी चिरैया उड़ि जइहैं
रहि जइहैं निबिया अकेर,
बलैया लेहु बीरन की।
हो मोरे बाबा।

बुन्देली

देखो सखी वर्षा ऋतु आई।
नाचत मोर, कोकिला बोलत,
चातक, दादुर शोर मचाई।
घुमड़–घुमड़ गरजत घन तड़कत,
काली घटा नभ देत दिखाई।।

अभ्यास

1. क. तुम भी अपने क्षेत्र (इलाके) में गाया जाने वाला कोई लोकगीत लिखो।
   ख. क्या तुम यह गीत गा सकते हो ? गाकर सुनाओ।
   ग. इस लोकगीत पर एक चित्र बनाओ।